चरम सीमा पर है सेविवर्गीय प्रबन्ध और उसके अंकेक्षण का महत्व अपरिहार्य है। अंकेक्षण द्वारा सेविवर्गीय प्रबन्ध की कमियों तथा सुधार की संभावनाओं की ओर सरलता से इंगित किया जा सकता है जिससे एक सक्षम प्रबंध का संगठन होता है। सेविवर्गीय अंकेक्षण संस्था के कर्मचारियों को पूरी क्षमता से कार्य करने की प्रेरणा देता है तथा अधिकारियों की दायित्व पूर्ति का मूल्यांकन करता है।

अंकेक्षण संगठनों एवं संस्थाओं में व्याप्त अनियमितताओं को प्रकाश में लाता है। फलस्वरूप इसे दूर करने का प्रयास किया जाता है। अंकेक्षण संबंधी तथा सेविवर्गीय प्रबन्ध पर नियन्त्रणकारी यन्त्र है, इसलिए प्रबन्ध में लापरवाही का उदय नहीं हो पाता है। प्रबन्धकों की दायित्व क्षमता के आकलन के लिए भी अंकेक्षण श्रेष्ठ पैमाना है। वर्तमान में वैज्ञानिकीकरण के कारण औद्योगिक नीति, प्रबन्ध व्यवस्था तथा सिद्धान्तों में जो द्रुत परिवर्तन हो रहे हैं इससे भी अंकेक्षण के महत्व में वृद्धि हुई है। अंकेक्षण द्वारा प्रबन्ध-नीतियों की सारगर्भित समीक्षा और आलोचना से सेविवर्गीय प्रबन्ध-व्यवस्था लाभान्वित हुई है।

अंकेक्षण ने सेविवर्गीय प्रबन्ध की उपादेयता के प्रति कर्मचारियों के दृष्टिकोण को उसके प्रति सहानुभूतिपूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सेविवर्गीय- अंकेक्षण कार्यक्रम के तत्व

विभिन्न संस्थाओं की प्रकृति अलग-अलग होती है, इसलिए उनकी संगठन व्यवस्था के अनुरूप ही अलग-अलग संस्थाओं के लिए अंकेक्षण की कार्य विधि निश्चित की जाती है। यही कार्यविधि अंकेक्षण-कार्यक्रम कही जाती है। विभिन्न संस्थाओं में इस कार्यक्रम-निर्धारण के तत्व भिन्न-भिन्न होते हैं। प्रसिद्ध मनोविज्ञानी डेल योडर द्वारा एक आदर्श सेविवर्गीय

K. Nand M.A. 4th Sem (2)
4

अंकेक्षण कार्यक्रम के विभिन्न तत्व निम्न प्रकार बतलाए गए हैं—

(1) कार्मिक प्रबंधन तथा विकास—
संस्थान के कर्मचारियों के लिए उचित प्रबन्ध व्यवस्था की जाती है। उनके चहुँमुखी विकास के लिए प्रगतिशील पग उठाए जाते हैं तथा समय-समय पर संस्थान की आवश्यकता, विकास और सुधार के लिए कर्मियों की भर्ती-चयन, प्रशिक्षण एवं उनकी पदोन्नति की आलोचनात्मक समीक्षा की जाती है।

(2) कर्मियों की आवश्यकता का अनुमान— सेविवर्गीय अंकेक्षण संस्थान की आवश्यकताओं के अनुसार कर्मचारियों की संख्या में कमी या वृद्धि की सिफारिश करके कर्मचारी-आयोजन को वैज्ञानिक दिशा देता है।

(3) समन्वय और संगठन— विभागों के मध्य पारस्परिक समन्वय तथा उचित सम्प्रेषण की व्यवस्था की जाती है जिससे श्रमिकों में परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न हो सके और उनके कार्यों में समन्वय उत्पन्न होकर व्यवस्था-संगठन की स्थापना हो सके।

(4) श्रम नीतियाँ — अंकेक्षण की इस विधा में संस्था की उन्नति के लिए तथा समस्याओं को सुलझाने की दिशा में श्रम-संघों से सलाह लेकर कर्मचारियों के लिए उचित नेतृत्व प्रदान करने का प्रयत्न किया जाता है और इसके लिए कर्मचारी प्रशासन तथा श्रम नीतियों जैसे सामूहिक सौदेबाजी और श्रम-सहभागिता आदि के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए दिशा निर्देश दिया जाता है।

(5) कार्य के प्रति श्रमिक की रुचि के लिए प्रेरणा— अंकेक्षण ऐसे सुझाव देते हैं जिससे श्रमिकों को अपने कार्य के प्रति रुचि बनाए रखने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

(6) शोध एवं योजना— सेविवर्गीय अंकेक्षण के द्वारा कर्मियों के विकास के लिए सम्बद्ध क्षेत्रों में कमी अनुसंधान और अभिनवीकरण की योजना का निर्माण करके उन्हें अधिक सक्षम बनाने का प्रयास किया जाता है जिससे उत्पादन में वृद्धि हो सके और गुणात्मकता का स्तर उत्कृष्ट किया जा सके।

The End